५ आवरण पूजा, बगलामुखी यन्त्र

माता महामाया के पूजन के उपरान्त उनके परिवार का पूजन भी एक आवश्यक पूजनांङ्ग है। इसके अभाव में साधक का प्रयास अपूर्ण ही रहेगा। परिवार पूजा के लिये साधक को बगलामुखी यन्त्र का निर्माण करना होगा।

सर्वप्रथम पूजा स्थान पर गाय के गोबर से लीप लें। फिर उस स्थान पर रेत की मोटी पर्त बिछा लें और उस पर हरिद्राचूर्ण से यन्त्रराज का निर्माण करें। यन्त्र का स्वरूप निम्नवत् है–
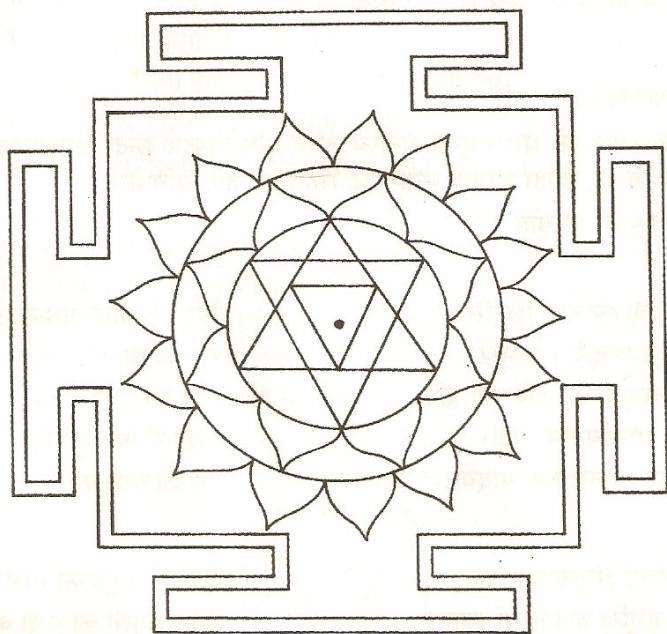
यन्त्र पूजा से पूर्व पूजन सामग्री साधक अपने पास पहले से ही रख लें। इस सामग्री में पुष्प, अक्षत, अर्घ्य पात्र व जल का लोटा होना आवश्यक है, क्योंकि प्रत्येक मन्त्र के अन्त में पुष्प व जल से पूजन व तर्पण किया जाता है।

यंत्र स्थापना के उपरान्त माँ पीताम्बरा से मानसिक रूप से परिवारार्चन की अनुमति लें, यथा–

"श्री पीताम्बरे तत्वावरण देवता पूजनार्थं अनुज्ञां देहि।"

◆ मूल मंत्र न्यास ◆

सर्वप्रथम मूल मंत्र से न्यास करें। पहले तीन बार मंत्र से प्राणायाम करें, फिर विनियोग कर ऋष्यादिन्यास करें।

◆ मन्त्रोद्धार ◆

प्रणवं स्थिरमायां च ततश्च बगलामुखीम्।
तदन्ते सर्व दुष्टानां ततो वाचं मुखं पदं।।
स्तम्भयेति ततो जिह्वां कीलयेति पद द्वयम्।
बुद्धिं नाशय पश्चात्तु स्थिरमायां समालिखेत्।।
लिखेच्च पुनरुोङ्कार स्वाहेति पदमन्ततः।
षटत्रिंशदक्षरी विद्या सर्वसम्पतकरी मता।

◆ यन्त्रोद्धार ◆

बिन्दुस्त्रिकोण-षट्कोण-वृत्ताष्टदलमेव च।
वृतं च षोड़शदलं यन्त्रं च भूपुरात्मकम्।।

◆ विनियोग ◆

सीधे हाथ में जल लेकर मंत्र पढ़ें–

"ॐ अस्य श्री बगलामुखि मन्त्रस्य नारदऋृषि त्रिष्टुप छन्दः बगलामुखी देवता, ह्ल्रीं बीजम् स्वाहा शक्तिः ममाभिष्ट सिद्धयर्थे जपे विनियोगः।"

(जल पृथ्वी पर छोड़ दें)

◆ ऋष्यादिन्यास ◆

नारद ऋषये नमः शिरसि।	(सिर पर दाहिने हाथ से छुएं)
त्रिष्टुप छन्दसे नमः मुखे।	(मुँह को छुएं)
बगलामुखी देवतायै नमः हृदि।	(हृदय को छुएं)
ह्ल्रीं बीजाय नमः गुह्ये।	(गुह्यंग में स्पर्श करें)
स्वाहा शक्तये नमः पादयोः।	(पैरो को स्पर्श करें)

◆ करन्यास ◆

ॐ ह्ल्रीं अंगुष्ठाभ्यां नमः।	(हाथ को अंगूठे का स्पर्श करें)
बगलामुखि तर्जनीभ्यां स्वाहा।	(प्रथम अंगुली का स्पर्श करें)
सर्व दुष्टानां मध्यमाभ्यां वषट्।	(मध्यमा का स्पर्श करें)

वाचं मुखं पदं स्तम्भय अनामिकाभ्याम् हुम्। (अनामिका का स्पर्श करें)

जिह्वां कीलय कनिष्ठिकाभ्यां वौषट। (अंतिम छोटी अंगुली का स्पर्श करें)

बुद्धिं विनाशय ह्ल्रीं ॐ स्वाहा करतलकर पृष्ठाभ्यां फट्। (दोनों हथेलियों के आगे व पीछे के भागों का स्पर्श करें)

◆ **हृदयादिन्यास** ◆

ॐ ह्ल्रीं हृदयाय नमः। (हृदय को दाहिने हाथ से स्पर्श करें)

बगलामुखि शिरसे स्वाहा। (सिर का स्पर्श करें)

सर्व दुष्टानां शिखायै वषट्। (शिखा का स्पर्श करें)

वाचं मुखं पदं स्तम्भय कवचाय हुम्। (कवच बनायें)

जिह्वां कीलय् नेत्र त्रयाय वौषट्। (नेत्रों का स्पर्श करें)

बुद्धिं विनाशय ॐ ह्ल्रीं स्वाहा, अस्त्राय फट् (सिर के पीछे से दायें हाथ से चुटकी बजाते हुये दाहिने हाथ पर बायें हाथ की तर्जनी व मध्यमा से तीन ताली बजायें)

◆ **ध्यान** ◆

मध्ये सुधाब्धि-मणिमण्डप-रत्नवेद्यां
सिंहासनोपरिगतां, परिपीतवर्णाम्।
पीताम्बराभरण-माल्य-विभूषिताङ्गी
देवीं स्मरामि धृत मुद्‌गर वैरि जिह्वाम्।।
जिह्वाग्रमादाय करेण देविं वामेन शत्रुन् परिपीड़यन्तीम्।
गदाभिघातेन च दक्षिणेन पीताम्बराढयां द्विभुजां नमामि।।

इस प्रकार माता का ध्यान करके उनका मानसोपचार पूजन करें, फिर बाह्य पूजन (आवरण पूजा) आरम्भ करें।

सर्व प्रथम यन्त्र का शुद्ध जल से प्रक्षालन करके चन्दन आदि चढ़ायें और मूल मंत्र से पुष्पाञ्जलि अर्पित करें। अर्घ्य-स्थापना करें। अपने बायीं ओर चतुरस्रवृतत्रिकोणात्मक मण्डल बनाकर उसके मध्य में **"ॐ पृथिव्यै नमः। ॐ कमठाय नमः। ॐ शेषाय नमः।"** कहते हुये गन्धाक्षत, पुष्पादि से पूजन करें और **"ॐ अग्निमण्डलाये दशकलात्मने बगलार्घ्य पात्रासनाय नमः"** कहकर उस त्रिकोण के ऊपर अर्घ्यपात्र रखकर **"ॐ दशकलात्मने अग्निमण्डलाय नमः।"** इससे गन्धाक्षत, पुष्प आदि से पूजन करें।

चतुरस्रवृतत्रिकोणात्मक मण्डल का प्रारूप—
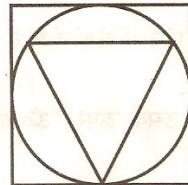
चित्र संख्या - २

◆ अग्नि की दश कलायें ◆

"ॐ वह्निमण्डलाय दशकलात्मने श्री पीताम्बरायाः सामान्यर्घ्यपात्रासनाय नमः।"

(१) यं धूम्रर्चिषे नमः।
(२) रं उष्मायै नमः।
(३) लं ज्वालिन्यै नमः।
(४) वं ज्वालिन्यै नमः।
(५) शं विस्फुलिङ्गिन्यै नमः।
(६) षं सुश्रियै नमः।
(७) सं स्वरूपायै नमः।
(८) हं कपिलायै नमः।
(९) ळं हव्यवाहायै नमः।
(१०) क्षं कव्यवाहायै नमः।

तद्‌परान्त–

"ॐ सूर्यमण्डलाय द्वादशकलात्मने श्री पीताम्बरार्घ्यपात्राय नमः।"

फिर अर्घ्य पात्र का पूजन करें।

◆ द्वादश कलायें ◆

(१) कं भं तपिन्यै नमः।
(२) खं वं तापिन्यै नमः।
(३) गं फं धूम्रायै नमः।
(४) घं पं मारिच्यै नमः।
(५) ङं नं ज्वालिन्यै नमः।
(६) चं धं रुच्यै नमः।
(७) छं दं सुषुम्णायै नमः।
(८) जं थं भोगदायै नमः।
(९) झं तं विश्वायै नमः।
(१०) जं णं बोधिन्यै नमः।
(११) टं ढं धारिण्यै नमः।
(१२) ठं डं क्षमायै नमः।

फिर प्राण-प्रतिष्ठा करें–

◆ प्राण-प्रतिष्ठा ◆

शं षं सं हं ळं क्षं वं लं रं यं मं भं बं फं पं नं धं दं थं तं णं ढं डं ठं टं ञं झं जं छं चं ङ घं गं खं कं अः अं औं ओं ऐं एं लॄं लृं ॠं ऋं ऊं उं ईं इं आं अं

अब पात्र में अर्घ्य रूप में जल भरें और उसके ऊपर **"ॐ सोममण्डलाय षोडशकलात्मने बगलार्घ्यमृताय नमः।"**

◆ षोडशकलायें ◆

(१) अं अमृतायै नमः।
(२) आं मानदायै नमः।
(३) इं पूषायै नमः।
(४) ईं तुष्टयै नमः।
(५) उं पुष्टयै नमः।
(६) ऊं रत्यै नमः।
(७) ऋं धृत्यै नमः।
(८) ॠं शशीन्यै नमः।
(९) लृं चन्द्रिकायै नमः।
(१०) ॡं कान्त्यै नमः।
(११) एं ज्योत्सनायै नमः।
(१२) ऐं श्रियै नमः।
(१३) ओं प्रीत्यै नमः।
(१४) औं अंगदायै नमः।
(१५) अं पूर्णायै नमः।
(१६) अः पूर्णामृतायै नमः।

पूजन करके अंकुश मुद्रा से सूर्यमण्डल से तीर्थ का आह्वान करके, जल में षडगन्यास करके, धेनु मुद्रा से अमृतीकरण करते हुये उस जल में भगवती का ध्यान करते हुए शंख मुद्रा तथा योनिमुद्रा का प्रदर्शन करें व मूल मन्त्र से देवी का गन्धादि से पूजन करें। जल को मत्स्य मुद्रा से आच्छादित करते हुये आठ बार मूल मन्त्र से अभिमन्त्रित करें। इस जल को अपने ऊपर तथा पूजा सामग्री पर छिड़के।

अब यन्त्र पूजन आरम्भ करें।

सबसे पहले अपने उत्तर भाग में **"गुं गुरुभ्यो नमः"** तथा दाहिनी ओर **"गं गणपतये नमः"** बोलकर पुष्पादि से पूजन करें। अब यन्त्र राज के मध्य में पूजन करें। (पीठ पूजन)

ॐ मं मण्डूकाय नमः।
ॐ कां कालाग्निरुद्राय नमः।
ॐ मं मूल प्रकृत्यै नमः।
ॐ आं आधारशक्तये नमः।
ॐ कूं कूर्माय नमः।
ॐ धं धराय नमः।
ॐ सुं सुधासिन्धवे नमः।
ॐ श्वें श्वेतदीपाय नमः।
ॐ सुं सुराङ्घ्रिपेश्यो नमः।
ॐ मं मणिहर्म्याय नमः।
ॐ हें हेमपीठाय नमः।

◆ अग्न्यादि-पीठ पाद चतुष्टये ◆

ॐ धं धर्माय नमः।

ॐ ज्ञां ज्ञानाय नमः।

ॐ वै वैराग्याय नमः।

ॐ ऐं ऐश्वर्याय नमः।

◆ पूर्वादिपीठगात्रचतुष्टये ◆

ॐ अं अधर्माय नमः।

ॐ अं अज्ञानाय नमः।

ॐ अं अवैराग्याय नमः।

ॐ अं अनैश्वर्याय नमः।

◆ मध्ये ◆

ॐ अं अनन्ताय नमः।

ॐ तं तत्व पदमासनाय नमः।

ॐ विं विकारात्मक केशरेभ्यो नमः।

ॐ प्रं प्रकृत्यात्मक पत्रेभ्यो नमः।

ॐ पं पञ्चाशतवर्ण कर्णिकायै नमः।

ॐ सं सूर्यमण्डलाय नमः।

ॐ इं इन्दुमण्डलाय नमः।

ॐ पां पावकमण्डलाय नमः।

ॐ सं सत्त्वाय नमः।

ॐ रं रजसे नमः।

ॐ तं तमसे नमः।

ॐ आं आत्मने नमः।

ॐ अं अन्तरात्मने नमः।

ॐ पं परमात्ने नमः।

ॐ ज्ञां ज्ञानात्मने नमः।

ॐ मां मायातत्वाय नमः।

ॐ कं कलातत्वाय नमः।

ॐ विं विद्यातत्वाय नमः।

ॐ पं परमतत्वाय नमः।

तदोपरान्त पूर्व आदि दिशा में अष्ट दल पर नव शक्ति का पूजन करें—

ॐ जयायै नमः।

ॐ विजयायै नमः।

ॐ अजितायै नमः।

ॐ अपराजितायै नमः।

ॐ नित्यायै नमः।

ॐ विलासिन्यै नमः।

ॐ दोग्ध्र्यै नमः।

ॐ अघोरायै नमः।

मध्य में–

ॐ मंगलायै नमः।

उपरोक्त पीठ शक्ति पूजन करने के उपरान्त यन्त्र को दूध व जल की धार आदि प्रदान करके निम्नांकित मंत्रोच्चार करें–

ॐ ह्ल्रीं बगलामुखी योग पीठाय नमः।

तद्उपरान्त माता का ध्यान करें कि उनके मुख से तेज निकल रहा है। आप भी अपने हृदय से तेज निकालकर देवी के तेज के साथ संयोजन कर, अंजलि में पुष्प लेकर, मूल मन्त्र से यन्त्र पर स्थापना करें। फिर यन्त्र में भगवती का आह्वान करते हुए, आह्वानी, स्थापिनी, सन्निधापिनी, सन्निरोधिनी मुद्राओं का प्रदर्शन करते हुये **"हुँ"** से अवगुण्ठित कर **"श्री पीताम्बरे सकलीकृता भव, सकलीकृता भव।"** फिर **"श्री पीताम्बरे इहाऽमृतीकृत्य भव, इहाऽमृतीकृत्य भव"** धेनुमुद्रा से अमृती कर महामुद्रा से परमी कर पराम्बा के अंग में षड्ंग न्यास कर प्राण प्रतिष्ठा करें–

◆ प्राण-प्रतिष्ठा ◆

भगवती के हृदय को स्पर्श करते हुये विनियोग करें–

◆ विनियोग ◆

ॐ अस्य श्री प्राणप्रतिष्ठामन्त्रस्य ब्रह्माविष्णुरुद्रा ऋषयः ऋग्यजुसामानिच्छन्दासि, पराऽऽख्या प्राणशक्तिर्देवता, आं बीजं, ह्रीं शक्तिः, क्रौं कीलकम् देवी प्राण प्रतिष्ठापने विनियोगः।

◆ ऋष्यादिन्यास ◆

ॐ अंगुष्ठयो। ॐ आं ह्रीं क्रौं अं कं खं गं घं ङं आं ॐ ह्रीं वायवग्निसलिल पृथ्वीस्वरूपाऽऽत्मनेऽंग प्रत्यंगयौः तर्जन्येश्च। ॐ आं ह्रीं क्रौं इं चं छं जं झं ञं ईं परमात्मपरसुगन्धाऽऽत्मने शिरसे स्वाहा मध्यमयोश्च। ॐ आं ह्रीं क्रौं ङं टं ठं डं ढं णं ॐ श्रोत्रत्वक्चक्षु-जिव्हाघ्राणाऽऽत्मने शिखायै वषट् अनामिकयोश्च। ॐ आं ह्रीं क्रौं एं तं थं दं धं नं प्राणात्मने-कवचाय हुं कनिष्ठिकयोश्च। ॐ आं ह्रीं क्रौं ओं पं फं बं भं मं वचनादानगमनविसर्गानन्दाऽऽत्मने औं नेत्र त्रयाय वौषट्। ॐ आं ह्रीं क्रौं अं यं रं लं वं शं षं सं हं ळं क्षं अः मनोबुद्धयहंकार चित्ताऽऽत्मने अस्त्राय फट्।

इस प्रकार न्यास करके पुष्पादि से यन्त्र में हृदय को स्पर्श करते हुये बोलें–

ॐ आं ह्रीं क्रौं बं यं रं लं वं शं षं सं हों हं सः बगलायाः प्राणा इह प्राणाः। ॐ आं ह्रीं

क्रों बं यं रं लं वं शं षं सं हों हं सः बगलाया जीव इह स्थितः। ॐ आं ह्रीं क्रों वं यं रं लं वं शं षं सं हों हं सः बगलाया सर्वेन्द्रियाणि इह स्थितानि। ॐ आं ह्रीं क्रौं बं यं रं लं वं शं षं सं हों हं सः बगलाया वाङ्मनश्चक्षु-श्रोत्र-घ्राण-प्राणा इहागत्य सुखं चिरं तिष्ठन्तु स्वाहा।

तद्पोरान्त भगवती का पंचोपचार अथवा षोडशोपचार से पूजन कर पुष्पाञ्जलि लेकर देवी से परिवारार्चन की अनुमति प्राप्त करें।

"सच्चिन्मये! परे! देवि! परामृतरसप्रिये!।
अनुज्ञां देहि देवेशि! परिवार्चनाय मे!!

◆ प्रथम आवरण ◆

त्रिकोण में—
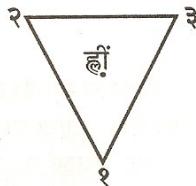
(१)	ॐ सत्वाय नमः।	ॐ सत्व श्री पादुकां पूजयामि तर्पयामि।
(२)	ॐ रजसे नमः।	ॐ रज श्री पादुकां पूजयामि तर्पयामि।
(३)	ॐ तमसे नमः।	ॐ तम श्री पादुकां पूजयामि तर्पयामि।

चित्र संख्या - ३

अभीष्ट सिद्धिं मे देहि! शरणागत वत्सले।
भक्त्या समर्पये तुभ्यं प्रथमावरणाय ते नमः।।

(इस मन्त्र से पुष्पाञ्जलि अर्पित करें।)

षटकोण में—

हृदय में	(४)	ॐ ह्ल्रीं नमः।
शिरसि	(५)	ॐ बगलामुखि नमः।
शिखायै	(६)	ॐ सर्वदुष्टानां नमः।
कवचाय्	(७)	ॐ वाचं मुखं पदं स्तम्भय नमः।
नेत्र त्रयाय	(८)	ॐ जिह्वां कीलय नमः।
अस्त्राय	(९)	ॐ बुद्धिं विनाशय ह्ल्रीं ॐ स्वाहा।
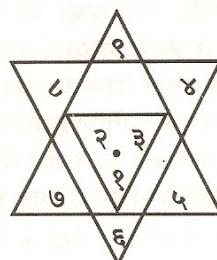
चित्र संख्या - ४

ॐ अभीष्ठसिद्धिं मे देहि शरणागतवत्सले।
भक्तया समर्पये तुभ्यं द्वितीयावरणाय ते नमः॥

(इस मन्त्र से पुष्पाञ्जलि अर्पित करें।)

◆ **यन्त्र पूजा** ◆

(पूर्वादि अष्ट दल में पीछे के भाग में)

(१०) **ॐ ब्राह्मयै नमः।**
(११) **ॐ माहेश्वर्यै नमः।**
(१२) **ॐ कौमार्यै नमः।**
(१३) **ॐ वैष्णवै नमः।**
(१४) **ॐ वाराह्यै नमः।**
(१५) **ॐ इन्द्राण्यै नमः।**
(१६) **ॐ चामुण्डायै नमः।**
(१७) **ॐ महालक्ष्म्यै नमः।**
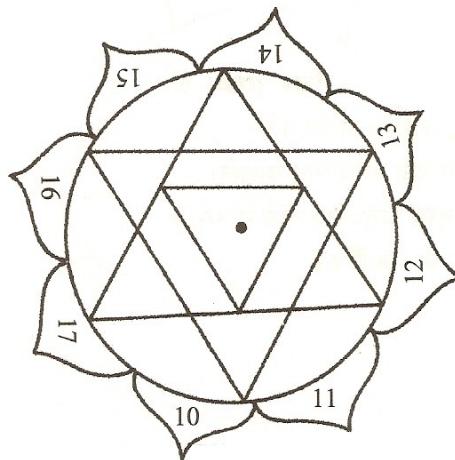
चित्र संख्या- 5

अभिष्ट सिद्धिं मे देहि शरणागतवत्सले।
भक्तया समर्पये तुभ्यं तृतीयावरणाय ते नमः॥

(यन्त्रराज को पुष्पाञ्जलि अर्पित करें।)

अष्टदल के अग्रभागों में पुनः पूजा का क्रम जारी करें:-

(१८) **ॐ असितांङ्ग भैरवाय नमः।**
(१९) **ॐ रुरु भैरवाय नमः।**
(२०) **ॐ चण्डभैरवाय नमः।**

(२१) ॐ क्रोध भैरवाय नमः।
(२२) ॐ उन्मत्त भैरवाय नमः।
(२३) ॐ कपाल भैरवाय नमः।
(२४) ॐ भीषण भैरवाय नमः।
(२५) ॐ संहार भैरवाय नमः।
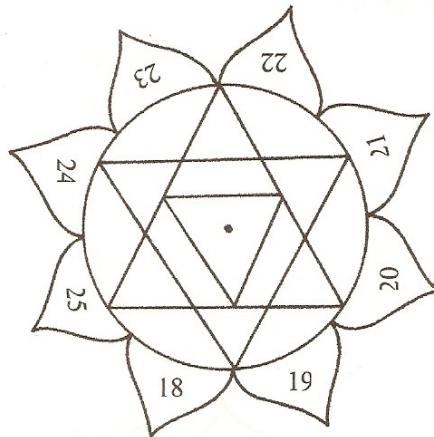
चित्र संख्या-६

पूजनोपरान्त यन्त्रराज को पुष्पाञ्जलि अर्पित करें–

अभिष्ठ सिद्धिं मे देहि शरणागत वत्सले।
भक्त्या समर्पये तुभ्यं चतुर्थावरणाये ते नमः।।

षोडशदल में पुनः पूजा का क्रम जारी करें–

(२६) ॐ मंगलायै नमः।
(२७) ॐ स्तंभिन्यै नमः।
(२८) ॐ जृंभिण्यै नमः।
(२९) ॐ मोहिन्यै नमः।
(३०) ॐ वश्यायै नमः।
(३१) ॐ बलायै नमः।
(३२) ॐ अचलायै नमः।
(३३) ॐ भूधरायै नमः।
(३४) ॐ कल्मषायै नमः।
(३५) ॐ धात्र्यै नमः।

(३६) ॐ कलनायै नमः।

(३७) ॐ कालाकर्षिण्यै नमः।

(३८) ॐ भ्रामिकायै नमः।

(३९) ॐ मदंगमनाय नमः।

(४०) ॐ भोगस्थायै नमः।

(४१) ॐ भाविकायै नमः।
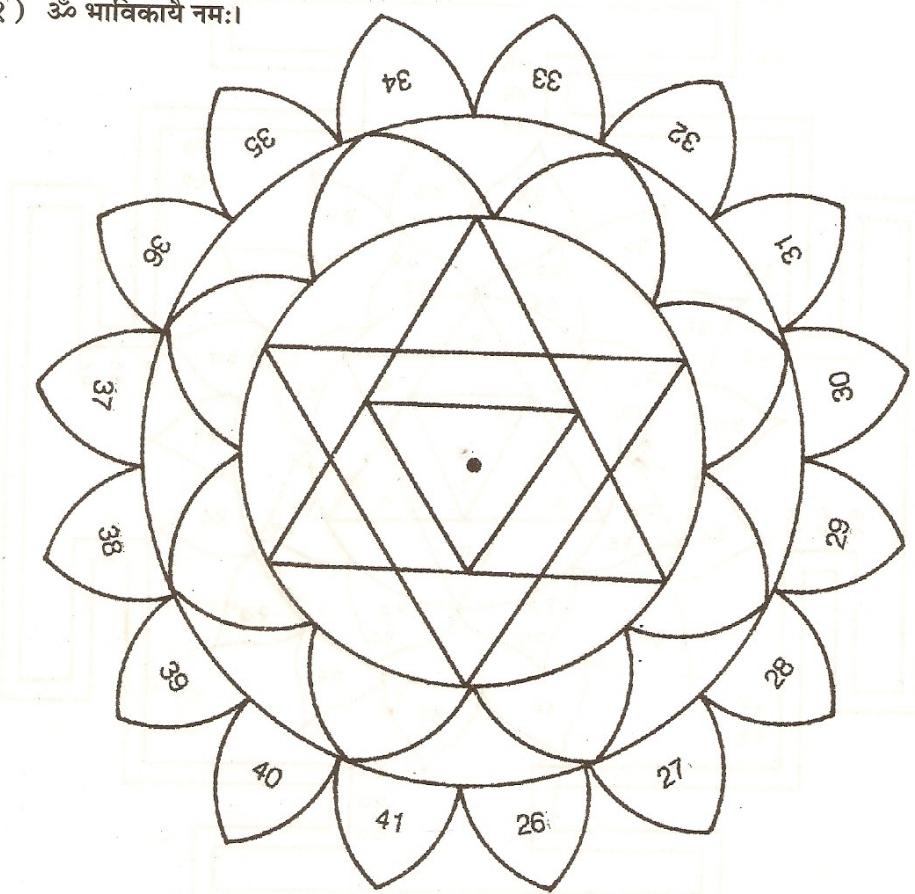
चित्र संख्या -७

पुनः यन्त्रराज को पुष्पाञ्जलि अर्पित करें–

अभिष्ठ सिद्धिं मे देहि शरणागत वत्सले।

भक्तया समर्पये तुभ्यं पञ्चमावर्णाय ते नमः॥

भूपुरस्य पूर्वादिचतुद्वारे–

पुनः पूजा का क्रम जारी करें–

(४२) ॐ गं गणपतये नमः।

(४३) ॐ बं बटुकायै नमः।

(४४) ॐ यां योगिनिभ्यो नमः।

(४५) ॐ क्षां क्षेत्रपालाय नमः।
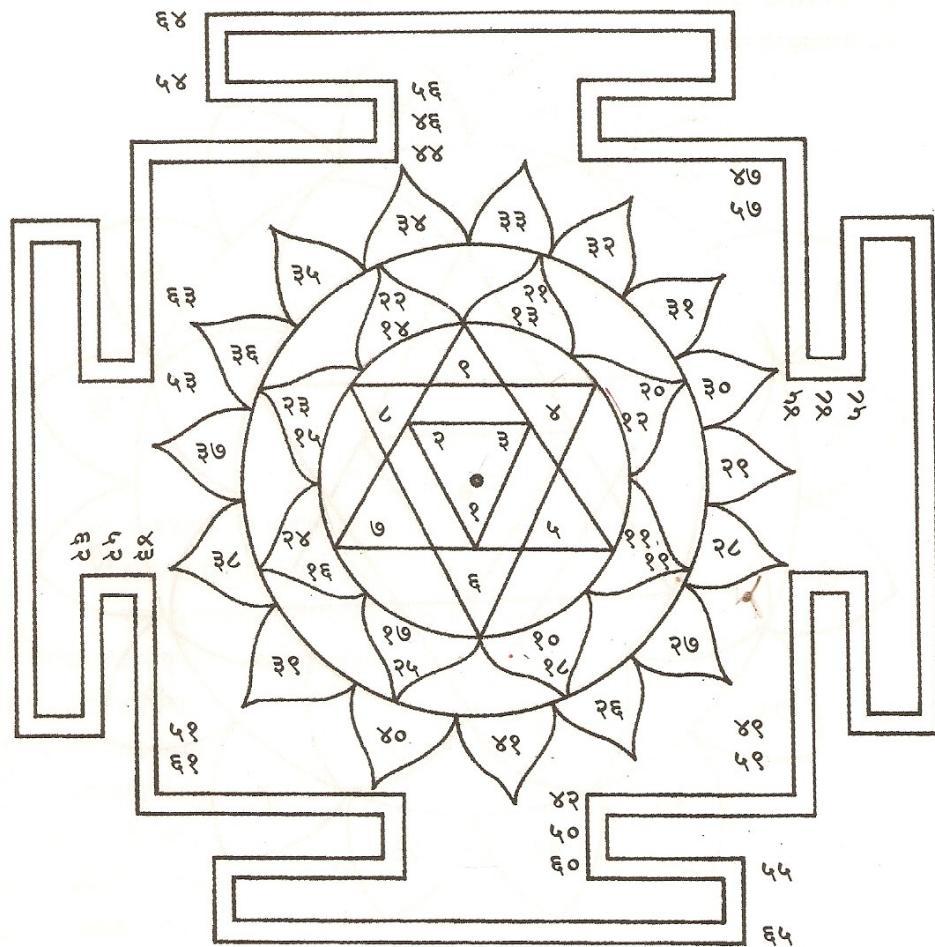
चित्र संख्या - ८

पुनः पुष्पाञ्जलि अर्पित करें—

अभीष्ठ सिद्धिं मे देहि शरणागत वत्सले।
भक्तया समर्पये तुभ्यं षष्ठावरणाय ते नमः।।

पूर्व से अग्निकोण क्रम में–

पुनः पूजा क्रम आरम्भ करें–

(४६) **ॐ लं इन्द्राय नमः।**

(४७) **ॐ रं अग्नये नमः।**

(४८) **ॐ मं यमाय नमः।**

(४९) **ॐ क्षं निऋत्यै नमः।**

(५०) **ॐ वं वरुणाय नमः।**

(५१) **ॐ यं वायवे नमः।**

(५२) **ॐ कुं कुबेराय नमः।**

(५३) **ॐ हं ईशानाय नमः।**

(५४) **ॐ आं ब्रह्मणे नमः।**

(५५) **ॐ ह्रीं अनन्तायै नमः।**

(५६) **ॐ वं वज्राय नमः।**

(५७) **ॐ शं शक्तयै नमः।**

(५८) **ॐ दं दंडाय नमः।**

(५९) **ॐ खं खड्गाय नमः।**

(६०) **ॐ पं पाशाय नमः।**

(६१) **ॐ अं अंकुशायै नमः।**

(६२) **ॐ गं गदायै नमः।**

(६३) **ॐ त्रिं त्रिशुलायै नमः।**

(६४) **ॐ पं पद्माय नमः।**

(६५) **ॐ चं चक्राय नमः।**

पुनः पुष्पाञ्जलि यंत्रराज को अर्पित करें।

अभीष्ठ सिद्धिं मे देहि शरणागत वत्सले।
भक्तया समर्पये तुभ्यं सप्तावरणाय ते नमः॥

यन्त्र पूजा के उपरान्त मूल मन्त्र से धूप, दीप आदि कर भगवती को प्रदान करें। स्तोत्र आदि का पाठ करें। यदि अनुष्ठान करना है, तो पुरुश्चरण हेतु जप आरम्भ करें। यदि सामान्य रूप से जाप करें तो कम से कम एक माला करें। यदि दस माला करें तो अति उत्तम होगा, क्योंकि भण्डार में जितना अधिक संग्रह होगा, उतने ही सफल आप होंगे।

卐 卐 卐

विशेष

प्रत्येक देवी, देवता अथवा आयुद्ध के "नमः" तक उच्चारण के उपरान्त "श्री पादुकां पूजयामि तर्पयामि" का उच्चारण करते हुये पुष्प, पुष्प मिश्रित अक्षत अथवा केवल अक्षत चढ़ाकर दुग्ध अथवा जल से तर्पण करें। यथा–

"ॐ गं गणपतये नमः" के उपरान्त **"ॐ गणपति श्री पादुकां पूजयामि** (अक्षत आदि चढ़ायें) **तर्पयामि।** (दुग्ध अथवा जल चढ़ायें) क्रम संख्या १ से क्रम संख्या ६५ तक यही आवृत्ति रहेगी।
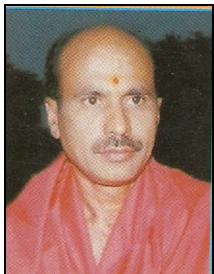
About The Author

Name : Shri Yogeshwaranand Ji
Mb : +919917325788, +919675778193
Email : shaktisadhna@yahoo.com
Web : http://anusthanokarehasya.com

Some Of the Books Written By Shri Yogeshwarnand Ji

1. Baglamukhi Sadhna Aur Siddhi
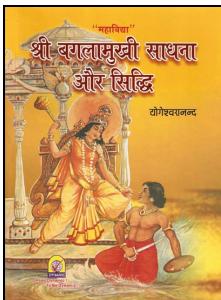
Download Click Here

2. **Mantra Sadhna**
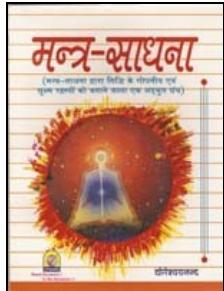
Download Click Here

3. **Shodashi Mahavidya**

Download Click Here